वायरिंग कितने प्रकार से की जाती है।

(1) क्लीट वायरिंग (2) सी॰टी॰एस या टी॰ आर॰ एस वायरिंग
(3) लकड़ी की केसिंग - कैपिंग वायरिंग या P.V.C वायरिंग
(4) कन्डयूट वायरिंग (5) लैड शीथड वायरिंग

(1) **क्लीट वायरिंग** - इस प्रकार की वायरिंग थोड़े दिनो तक काम आने के लिए की जाती है।
जैसे - शादि विवाह, कैम्प इन जगहो पर इस प्रकार की वायरिंग होती है

(2) **सी॰ टी॰ एस वायरिंग** - लकड़ी के बैटन पर टीन या तांबे की बनी क्लिपों से लगाते है। इस प्रकार की वायरिंग नमी वाले स्थानों के लिए अच्छी रहती है। लेकिन गर्मी और तेजाब के वाष्प को नही झेल सक्ती इस लिए यह वायरिंग वहा नहीं करते जहाँ अधिक गर्मी, चोट लगने का खतरा, तेजाब के वाष्प आदि हों।

(3) **P.V.C की केसिंग और कैपिंग वायरिंग** - आजकल P.V.C. या प्लास्टिक की चैनल वायरिंग ने ले लिया है। जिसे लगाने की विधि एक सी है। यह सस्ती तथा जल्दी होने वाली वायरिंग है। इसके केपिंग पर रंग की आवश्यक्ता नही होती है।

(4) **लैड शीथड वायरिंग** - इस प्रकार का वायरिंग में तारे बहुत आसानी से लकड़ी की बैटन पर धातु क्लिपों से लगती है। इस वायरिंग में जहा जोड़ लगाना हों जंक्शन बाक्स लगा देते है।

(5) कंड्यूट वायरिंग — इस प्रकार की वायरिंग में पी॰ वी॰ सी॰ की तारों को लोहे, स्टील या पी॰ वी॰ सी॰ के पाइपों में डालकर वायरिंग करते हैं। इसमें तारों पर चोट, आग तथा नमी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
यह वायरिंग दो प्रकार से की जाती है।

(A) सरफेस वायरिंग — कंड्यूट या पी॰ वी॰ सी॰ पाइप दीवार पर सैडल द्वारा लगाते हैं। सुविधा के अनुसार, Bend, Elbow Junction box, Tee आदि देते हैं। उसके बाद स्टील तार से पाइपों में तारों को खींचते हैं।

(B) कंसील्ड वायरिंग — यह वायरिंग आजकल बड़े-बड़े घरों, होटलों आफिसों में की जाती है
भवन निर्माण करते समय छत पड़ने के साथ ही छतों में डाल देते हैं। जब छतों का शटरिंग खुल जाता है। तो दीवारों पर पलस्तर होने से पहले सुविधा अनुसार दीवारों में नालियाँ खोदकर पाइपे फंसा देते हैं। फिर दीवारों पर पलस्तर होता है। उसके बाद स्टील की तारों द्वारा P.V.C. की तारे पाइपों में डालते हैं। इस प्रकार की वायरिंग बाहर से दिखने में सुन्दर लगता और बाहर से पाइप दिखाई नहीं देता है।